

मंजरी-6

(1) इतना ऊँचे उठो

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) प्रस्तुत कविता में 'ऊँचा उठने' के अर्थ के रूप में कवि यह कहना चाहते हैं कि हम सभी को जाति, धर्म, संप्रदाय आदि संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव कल्याण के लिए समर्पित हो जाना चाहिए।

(ख) 'अगर कहीं हो स्वर्ग' वाक्यांश का अर्थ यह है कि अगर स्वर्ग नामक कोई चीज कहीं पर है तो हमें उसे इस धरती पर लेकर आना है क्योंकि हम इस धरती को ही स्वर्ग बनाना चाहते हैं।

(ग) दुनिया को एक दृष्टि से देखने के लिए कवि इसलिए कह रहे हैं ताकि हम मानव कल्याण के लिए बिना किसी भेदभाव के अपने को समर्पित कर सकें।

(घ) 'शीतल बहने' का तात्पर्य यह है कि हम मनुष्य की परेशानी को उसी तरह दूर करें जैसे मंद पवन बहकर हमें आराम पहुँचाता है।

(ङ) परिवर्तन के समान गतिमय होने का अर्थ यह है कि हमें अपना काम लगातार बिना रूके ही करते रहना चाहिए क्योंकि समय का प्रवाह कभी रूकता नहीं है जो जीवन का शाश्वत सत्य है।

(2) कविता की पंक्तियों का भावार्थ लिखिए-

(क) हमें आसमान के समान इतना ज्यादा ऊठना चाहिए ताकि हम इस दुनिया को एक समान दृष्टि से देखकर इस धरा को समान भाव भावनाओं की बारिश सिंचित कर सकें।

(ख) हमें अपने बीते समय से उतना ही लेना चाहिए जितना हमारे पोषण के लिए आवश्यक हो, क्योंकि अतीत के जीर्ण-शीर्ण समय मृत्यु के ही समान होते हैं।

(ग) अगर कहीं पर स्वर्ग नामक कोई चीज है तो हमें उसे इस धरती पर लाना है। क्योंकि हमें इस धरती को स्वर्ग बनाना है।

(घ) सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे सभी हमारे साथ प्रतिपल रहते हैं और मानव शरीर को सुंदरता प्रदान करते हैं।

(3) सोच-समझकर बताइए-

(क) प्रस्तुत कविता द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी द्वारा रचित है।

(ख) भेद-भाव से भरे इस संसार में हमें शीतल पवन की तरह बहकर सबको शक्ति प्रदान करनी चाहिए।

(ग) कवि हमें परिवर्तन के समय लगातार गतिमय बनने को कहा है।

(घ) प्रस्तुत कविता से हमें यह शिक्षा प्राप्त होती है कि हमें जाति, धर्म, संप्रदाय आदि संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव कल्याण के लिए समर्पित हो जाना चाहिए।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) (iii) गगन के समान, (ख) (iii) शीतल,

(ग) (ii) परिवर्तन (घ) (ii) द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

(5) उच्चारण कीजिए-स्वयं कीजिए-

(6) निम्न शब्दों से वाक्य बनाइए-

(*) द्योतक-जीर्ण-शीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्योतक होता है।

(*) ज्वाला-सभ्य पुरुष ईर्ष्या रूपी ज्वाला से दूर रहते हैं।

(*) चिरंतन-जीवन के बाद मृत्यु चिरंतन सत्य है।

(*) प्रवाह-समय का प्रवाह कभी नहीं रूकता है।

(*) पोषक-हमें अतीत से उतना ही ग्रहण करना चाहिए हमारे भविष्य के लिए पोषक का काम कर सके।

(7) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

प्रवाह-रफ्तार, गति गगन-आसमान, आकाश

दृष्टि-नजर, निगाह कुंभ-घड़ा, मानव-शरीर

पवन-हवा, वायु

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

शाश्वत-ठहराव	अतीत-भविष्य
पोषक-अपोषक	समता-असमता
गतिमय-गतिहीन	मोह-विमोह
आकर्षण-विकर्षण	परिवर्तन-चिरंतन

(9) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए-

दृष्टि-दृष्टि, शाश्वत-शाश्वत, ब्रष्टि = वृष्टि,
स्वर्ग-स्वर्ग, जवाला-ज्वाला, चाँदनी-चाँदनी
जीर्ण-जीर्ण, परतिपल-प्रतिपल, चितन-चिंतन,
आकर्षण-आकर्षण

क्रियात्मक गतिविधियाँ-स्वयं कीजिए।

(2) लोभ का फल

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) किशन को अपने गाँव में सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि उसकी संपन्नता गाँव के अनेक लोगों को फूटी नहीं सुहाती थी। वे ऊपर से विनम्र बने रहते लेकिन अवसर मिलते ही उसे नुकसान पहुँचाते। वह बड़ी विनम्रता से उन्हें समझाता, किंतु उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसका सबसे समीप का पड़ोसी उसे नुकसान पहुँचाने में सदा आगे रहता।

(ख) दूसरे गाँवों में जाकर किशन मेहनत से खेती करने लगा। वह पहले से भी अधिक संपन्न हो गया। उसने अपना नया मकान बनवा लिया और बहुत-से जानवर खरीद लिए। किशन आराम से रहता था और अपनी सफलता पर गर्व करता था। कुछ दिनों में ही वह अपने उस संपन्नता के जीवन का अभ्यस्त हो गया और अनुभव करने लगा कि उसकी जमीन पर्याप्त नहीं है। कुछ और अधिक होती तो वह और अधिक सुख-सुविधा का जीवन व्यतीत करता। यह मनुष्य का स्वभाव है कि उसको जितना सुख मिलता है, वह उससे अधिक सुख प्राप्त करने की कामना करने लगता है।

(ग) किशन की मृत्यु का प्रमुख कारण अधिक-से-अधिक जमीन नापने का लालच था।

(घ) कोलों के क्षेत्र में पहुँचकर किशन ने उन्हें अपने साथ लाई वस्तुओं की भेंट देकर उन लोगों को खुश कर दिया।

(ङ) कोलों के सरदार द्वारा किशन को यह शर्त बताया गया कि हमारे यहाँ जमीन की कमी नहीं है। जितनी चाहो, अपनी पसंद की उतनी जमीन ले लो। किशन ने कहा कि मैं चाहता हूँ कि जो जमीन लूँ, कस्बे की अदालत में उसकी पक्की लिखा-पढ़ी हो जाए। जब सरदार ने किशन की शर्त मान ली, तब दीना ने पूछा जमीन किस भाव मिलेगी।

“एक हजार रुपया प्रतिदिन” सरदार ने उत्तर दिया। किशन चकित हुआ। बोला, “मेरी समझ में नहीं आया। एक दिन का यह कैसा हिसाब है?”

सरदार ने कहा, “एक दिन में पैदल चलकर जितनी जमीन तुम नाप डालो, उतनी ले लो। एक दिन का मूल्य एक हजार होगा। एक शर्त और है, यदि तुम जहाँ से चले पाओगे, उसी स्थान पर उसी दिन सूर्यास्त से पहले न लौट आओगे, तो तुम्हें जमीन नहीं मिलेगी और तुम्हारा एक हजार रुपया जब्त कर लिया जाएगा।”

किशन ने सोचा कि दिन भर में बहुत सारी जमीन घेरी जा सकती है। वह तुरंत मुखिया की शर्त पर जमीन लेने को तैयार हो गया।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए-

(क) संपन्न (ख) असंतुष्ट (ग) उत्साह (घ) प्रतिदिन (ङ) सूर्य के डबने।

(3) सोच-समझकर बताइए-

(क) गाँव के किसानों के बीच किशन की संपन्न किसानों की श्रेणी में स्थान था।

(ख) किसान की संपन्नता गाँव के अनेक लोगों पर फूटी आँखों न सुहाती थी। वे ऊपर से विनम्र बने रहते और अवसर मिलने पर उसे नुकसान पहुँचाते।

(ग) किशन द्वारा अदालत में अर्जी देने का परिणाम यह हुआ कि दो-तीन लोगों को अदालत ने जुर्माने से दंडित किया। लोग किशन से बैर रखने लगे।

(घ) एक दिन किशन अपने घर के बाहर चबूतरे पर चारपाई बिछाए बैठा था। एक परदेसी किसान उसके घर के सामने से निकला। उसने किशन को बताया कि वह सतलुज पार से आ रहा है। वहाँ उपजाऊ जमीन यूँ ही पड़ी है। वहाँ की बस्ती में नए बसने वाले किसान को बीस एकड़ जमीन मुफ्त मिल रही है। वहाँ रहकर खेती करने वाले किसान बड़ी जल्दी संपन्न हो जाते हैं। वहाँ के लोग संपन्न भी हैं और व्यावहारिक भी। वे चाहते हैं कि उनकी बस्ती बड़ी हो, अधिक लोग वहाँ रहें।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) किशन ने उनके द्वारा अपना नुकसान किए जाने पर उनके विरुद्ध अदालत में शिकायत कर दी थी।

(ख) (iii) जमीन का पट्टा

(ग) (iii) वह कोलों को उपहारों द्वारा प्रसन्न करके अधिकतम लाभ कमाना चाहता था।

(घ) (iii) वह हर संभव प्रयत्न द्वारा समय बचाना चाहता था जिससे सूर्यास्त तक अधिक-से-अधिक जमीन नाप सके।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए

(6) निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) असंतुष्ट—किशन अपने गाँव के लोगों के व्यवहार से असंतुष्ट था।

(*) विनम्र—विद्वान व्यक्ति विनम्र होते हैं।

(*) जुर्माना—जज ने चोर पर आर्थिक जुर्माना लगा दिया।

(*) लोकप्रिय—गाँधीजी लोकप्रिय नेता था।

(7) निम्नलिखित शब्दों में विशेषण छाँटिए—

लालची व्यक्ति—लालची, पाँच पांडव—पाँच, श्वेत पत्र—श्वेत, निराश मन—निराश, दो मीटर जमीन—दो मीटर, महत्वाकांक्षी किशन—महत्वाकांक्षी, अनगिनतता—अनगिनत, कठोर हृदय—कठोर, उत्साहित हृदय—उत्साहित, उपजाऊ धरती—उपजाऊ।

(8) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए—

(क) किशन ने अदालत में अर्जी दिया।

(ख) किशन अपने गाँव के लोगों से असंतुष्ट था।

(ग) किशन को अपनी सफलता पर गर्व था।

(घ) किशन ने एक हजार रुपए गिनकर टोपी पर रख दिए।

(9) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

खुशी—प्रसन्नता, निशान—चिन्ह, आराम—विश्राम।

भूमि—जमीन, धरती—धारा

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(3) वन : हमारी अमूल्य संपदा

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) प्राचीन काल में गुरुकुलों की स्थापना वनों में इसलिए की जाती थी कि वन आदिकाल से ही जीवन के निर्वाह हेतु आवश्यक वस्तुओं की अपूर्ति के प्रमुख साधन रहे हैं। भारत के प्राचीन ऋषि-मुनि वनों में आश्रम बनाकर रहते थे। ये आश्रम विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे। उस समय गुरुकुलों की स्थापना वनों में होती थी। इसके पीछे विचार यह था कि प्रकृति से संबंध बना रहे।

(ख) पर्यावरण के विभिन्न घटकों में वनों का अत्यधिक महत्व है। वनों से अनेक लाभ हैं। पेड़-पौधे वातावरण की अशुद्धि और हानिकारक वायु को पचाकर हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। ये भूमि को अधिक तप्त होने से रोकते हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि भू-तल पर वृक्ष न होते तो पृथ्वी का तापमान बढ़कर इतना अधिक हो जाता कि ध्रुवीय प्रदेशों पर जमी बर्फ पिघल जाती। उस बर्फ के पिघलने से पृथ्वी पर जल की मात्रा इतनी अधिक हो जाती कि पृथ्वी उसमें समा जाती। तब न पृथ्वी पर मानव रह पाता, न पशु-पक्षी और न ही वनस्पति-जगत।

वनों तथा परिवेश के हरे-भरे पेड़-पौधों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य प्रदूषण को रोककर वायुमंडल में संतुलन बनाए रखना है।

ये वातावरण में विद्यमान धूल-कणों को कम करते हैं तथा पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने में सहायक हैं।

(ग) वृक्षों के सवर्धन हेतु हमें अधिक-से-अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए एवं उनकी रक्षा करनी चाहिए जो मानव जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए परमावश्यक है। वृक्षों को अनावश्यक रूप से काटना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है।

(घ) वनों की अमूल्य संपदा का अधिकाधिक लाभ उठाने, पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने एवं मानव जीवन को सुखी और आनंदपूर्ण बनाने के उद्देश्य से वनों का संरक्षण और वृक्षारोपण द्वारा हरीतिमा सवर्धन अत्यावश्यक है। इसी में मानव जीवन की सुख-समृद्धि निहित है।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) अशुद्ध, (ख) आँधी, (ग) भूक्षरण,

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) अपने चारों ओर के वातावरण को पर्यावरण कहते हैं, क्योंकि हमारी सभी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति पर्यावरण के विभिन्न घटकों के द्वारा ही होती है। वायु, जल, पेड़-पौधे, मिट्टी आदि सभी पर्यावरण के विभिन्न अंग हैं।

(ख) पर्यावरण का संरक्षण स्वस्थ और सुखी मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि पर्यावरण हमारे जीवन के निर्वाह हेतु आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के प्रमुख साधन रहे हैं। पर्यावरण के विविध घटकों में वनों का अत्यधिक महत्व है। आज इनका उपयोग गृह-निर्माण, मेज-कुर्सी, दरवाजे, खिड़कियाँ, बैलगाड़ी, कृषि-उपकरण, खिलौने, खेल की सामग्री, वाद्य-यंत्र, नौकाएँ, खंभे, पुल, कागज, माचिस आदि बनाने में किया जाता है।

(ग) वृक्षों की रक्षा और उनका सवर्धन मानव जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए परमावश्यक है।

(घ) वृक्ष को हरा सोना कहा जाता है।

(ङ) देश में वन-क्षेत्र के विस्तार को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में वन-विस्तार को स्थान दिया जाता है। सामाजिक वानिकी 'संपूर्ण देश में वृक्षारोपण की व्यापक कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषकों के खेतों की मेड़ों तथा निकट की खाली भूमि में वृक्ष लगाने के लिए सरकार द्वारा पौधे उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके अतिरिक्त 'एक बच्चा-एक पेड़' कार्यक्रम के अन्तर्गत बच्चों को फलदार वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

'सामाजिकी वानिकी' कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रत्येक विकास खंड में प्रायः दो हेक्टेयर भूमि में पौधशाला की स्थापना की गई है। इन पौधशालाओं के लिए वन विभाग द्वारा विविध प्रकार की पौध तैयार की जाती हैं। इस कार्यक्रम से अधिकाधिक क्षेत्रों को लाभान्वित करने के लिए गाँवों व नगरों के निवासियों के परामर्श से पौधों के रोपण, क्षेत्रों का चयन एवं निर्धारण किया जाता है। इस रोपण क्षेत्रों में खेतों की मेड़ों की भूमि को भी सम्मिलित किया जाता है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) सोना, (ख) (iii) उर्वरा शक्ति (ग) (i) सुरक्षित रह सकी है। (घ) (i) नियंत्रित करते

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए—

(*) पर्यावरण—पर्यावरण का संरक्षण स्वस्थ एवं सुखी मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक है।

(*) वृक्ष—वृक्ष वर्षा में सहायक होते हैं।

(*) सत्य—हमें हमेशा सत्य बोलना चाहिए।

(*) जनसंख्या—जनसंख्या नियंत्रण सरकार की सबसे बड़ी चुनौती है।

(*) अमूल्य—मानव जीवन अमूल्य है।

(7) विलोम शब्द लिखिए—

स्वस्थ—अस्वस्थ, सुखी—दुःखी, आवश्यक—अनावश्यक, प्राचीन—नवीन, सम्मानित—अपमानित, सुरक्षित—असुरक्षित

(8) वचन बदलकर लिखिए—

विद्यार्थी—विद्यार्थियों, शाखा—शाखाएँ, कुर्सी—कुर्सियाँ, खिड़की—खिड़कियाँ, सड़क—सड़कें, पौधा—पौधे,

(9) संधि विच्छेद कीजिए—

इत्यादि = इति + आदि

अत्यावश्यक = अति + आवश्यक

भोजनावधि = भोजन + अवधि

सर्वाधिक = सर्व + अधिक

परमावश्यक = परम + आवश्यक

विद्यार्थी = विद्या + अर्थी

(4) ईमानदारी

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) दिवाकर फटे पुराने कपड़े पहने थैले में समान रखकर बेचने वाला एक गरीब बच्चा था।

(ख) दिवाकर एक ईमानदार बच्चा था। वह ईमानदारी से अपना सामान बेचता था।

(ग) जब दिवाकर के भाई उदय ने प्रताप के घर आकर बाकी बचे साढ़े-चौदह आने उन्हें लौटाया और बताया कि जब मेरा भाई आपसे नोट लेकर भुनाने गया था, मगर जब भुनाकर लौट रहा था तभी मोटर के नीचे आ गया तो उसके दोनों पैर कुचल गए। बड़ी देर बाद जब उसे होश आया तो उसने मुझे पैसे लौटाने को कहा। तब प्रताप को दिवाकर की ईमानदारी समझ में आ गयी।

(घ) उदय रामेश्वर के दरवाजे पर आकर उन्हें पुकारता है। तब प्रताप बाहर आते हैं और वह उन्हें अपने भाई दिवाकर के बारे में पूरी बात बताता है।

(ङ) डॉक्टर ने पंडितजी से कहा कि ऐसा लगता है कि इसके एक पैर की हड्डी टूट गई है। इसे अभी अस्पताल ले जाना चाहिए।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) दियासलाई (ख) भीख (ग) ठगना (घ) डॉ. शर्मा (ङ) बाजार

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) प्रस्तुत नाटक में तीन दृश्य हैं।

(ख) दिवाकर अपने थैले में रखे सामान अर्थात् छलनी, दियासलाई आदि बेचता था।

(ग) दिवाकर के भाई का नाम उदय था।

(घ) प्रताप ने दिवाकर की मदद उसके पैर की टूटी हड्डी ठीक करने के लिए एंब्युलेंस मँगाकर अस्पताल भेजकर की।

(ङ) दिवाकर जब नोट लेकर भुनाने गया था, तो भुनाकर लौटते समय एक मोटर के नीचे आ गया। उसके दोनों पैर कुचल गए थे।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (i) पैसे, (ख) (iii) एक, (ग) (iii) पैसे, (घ) (i) हड्डी (ङ) (i) दिवाकर को

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाए—

(*) छलनी—यदि मेरे पास पैसे होते तो मैं यह छलनी अवश्य खरीद लेता।

(*) अस्पताल—दिवाकर को अभी अस्पताल ले जाना चाहिए।

(*) ईमानदार—राजा, हरिश्चंद्र एक ईमानदार राजा थे।

(*) एंब्युलेंस—घायलों को एंब्युलेंस से अस्पताल पहुँचाया जाता है।

(7) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

अवश्य—कभी नहीं परिचित—अपरिचित गरीब—अमीर

होश—बेहोश गुण—अवगुण ईमानदार—बेईमान

(8) निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्धारण कीजिए—

पैसा—पुल्लिंग घर—पुल्लिंग हड्डी—स्त्रीलिंग

होश—पुल्लिंग छलनी—स्त्रीलिंग बाजार—पुल्लिंग

(9) निम्नलिखित शब्दों में 'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए—

चंचल = चंचलता, दानव = दानवता, मनुष्य = मनुष्यता, वीर = वीरता, विविध = विविधता, मानसिक = मानसिकता

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(5) पश्चाताप

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) धर्मराज युद्धिष्ठिर परीक्षित को राज्य देकर भाइयों और द्रौपदी सहित हिमालय की ओर प्रस्थान कर गए।

(ख) शृंगी ने परीक्षित को शाप इसलिए दिया क्योंकि उन्होंने समाधिस्थ ऋषि शमीक जो शृंगी ऋषि के पिता थे, के गले में अपने धनुष की नोक से एक मृत सर्प उठाकर शमीक ऋषि के गले में डाल दिए थे।

(ग) शमीक ऋषि की समाधि की समाप्ति पर उन्हें इस घटना की वास्तविकता का पता चला, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपने पुत्र ऋंगी ऋषि से कहा, “वत्स! इस अविवेक के लिए तुम्हें राजा को इतना कठोर शाप नहीं देना चाहिए था। ऋषि पुत्र होने के कारण तुम्हारा शाप मिथ्या नहीं होगा। अतः राजा परीक्षित को इसकी सूचना तत्काल दे देनी चाहिए।”

(घ) तक्षक मांत्रिक ब्राह्मण कश्यप को वापस यह कहकर भेजने में सफल हुए कि मैं आपके मंत्र शक्ति को अपने तपोबल से अधिक शक्तिशाली मानता हूँ। जितना धन आपको राजा परीक्षित से मिलने वाला है, उससे अधिक मैं दिए देता हूँ। उसे लेकर आप लौट जाएँ। मांत्रिक ब्राह्मण परिस्थितियों को समझ गया। वह तपस्वी से प्रचुर धन लेकर लौट गया।

(ङ) परीक्षित की मृत्यु तब हुई जब तक्षक राजा परीक्षित के लिए तोड़े जाने वाले पुरुषों में कीड़े के रूप में प्रवेश कर उनके नए सुदृढ़ प्रासाद में घुस गया। अवसर पाकर तक्षक ने राजा परीक्षित को डस लिया, जिससे उनकी मृत्यु हो गयी।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) पांडवों (ख) परीक्षित (ग) ऋषि (घ) कश्यप (ङ) मन

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) युद्धिष्ठिर ने राज्य अभिमन्यु पुत्र युवा राजा परीक्षित को सौंपा।

(ख) परीक्षित ऋषि पर क्रोधित इसलिए हुआ क्योंकि ऋषि समाधिस्थ होने के कारण परीक्षित के आगमन व उसके जल माँगने को नहीं जान सके। उन्हें शांत देखकर परीक्षित का पारा चढ़ गया।

(ग) ऋंगी ने परीक्षित को यह शाप दिया कि आज के सातवें दिन तक्षक के डसने से परीक्षित की मृत्यु हो जाएगी।

(घ) तक्षक एक तपस्वी के वेश में परीक्षित को डसने आया।

(ङ) पाश्चाताप की अग्नि कश्यप ब्राह्मण को जलाती रही।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) ऋषि से, (ख) (ii) ऋंगी ने

(ग) (ii) चिकना प्रासाद बनवाया (घ) (i) कश्यप

(ङ) (iii) कीड़े के रूप में

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) किसने, किससे, क्यों कहा—

(क) ऋंगी ऋषि ने स्वयं से क्योंकि राजा परीक्षित ने उनके समाधिस्थ पिता ऋषि शमीक के गले में अपने धनुष की नोक से मृत सर्प को डाल दिया था।

(ख) ऋषि शमीक ने अपने पुत्र ऋषि शृंगी से क्योंकि समाधि की समाप्ति पर ऋषि शमीक को घटना की वास्तविकता का पता चला, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ।

(7) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

जीत—विजय, उल्लास, उमंग

शत्रु—दुश्मन, विरोधी, हानिकारक

सर्प—साँप, विषधर, नाग

वृद्ध—बूढ़ा, जर, कमजोर

वृक्ष—पेड़ा, तरु, आदप

(8) निम्नलिखित शब्दों को विलोम शब्द लिखिए—

अपवित्र—पवित्र, मृत—जीवित, युद्ध—शान्ति, निष्फल—सफल, विष—अमृत, निंदा—प्रशंसा।

(9) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

शत्रु—शत्रुओं, ब्राह्मण—ब्राह्मणों, राजा—राजाओं, वृक्ष—वृक्षों, वृद्ध—वृद्धों, कीड़ा—कीड़ों।

(6) उन्नति का मंत्र

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) ऋतुओं के परिवर्तन से संसार की दशा मौसम और समय के रूप में बदलती है। जैसे—सुबह, शाम, जाड़ा, गर्मी, बरसात, बसंत आदि।

(ख) हमारे जीवन में कभी बालपन मिलता है तो कभी जवानी आती है तो कभी बुढ़ापा आती है।

(ग) कभी सवेरा होता है तो कभी अंधेरा। कभी डाली पर फूल खिलता है तो कभी झड़ जाता है। कभी हमें बालपन मिलता है तो कभी जवानी एवं बुढ़ापा। कभी नदी-नाले उमड़ते हैं तो कभी धूल ही उड़ती है। अंधेरी रात में धरती ओस-कणों से धुल जाती है आदि।

(घ) समय के मूल्य को हम इसी से समझ सकते हैं कि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। अतः जो कुछ भी करना है अभी समय पर करना है। आलस्य कभी नहीं करना है। क्योंकि समय हर पल बदलता रहता है। समय को नष्ट कर कोई भी विद्या, धन या सुख नहीं पा सकता है। समय को कभी भी नष्ट नहीं करना ही उन्नति का सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। जो समय के मूल्य को समझ जाता है उसकी सारी विपदाएँ टल जाती हैं।

(2) नीचे दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए—

(क) समय के अनवरत प्रवाह को हम इसी से समझ सकते हैं कि हम कभी सवेरा देखते हैं और कभी अंधेरा और कभी चाँद को मुसकराते हुए देखते हैं।

(ख) बालपन के बाद जवानी पाने पर जब हम पागल होकर झूमते रहते हैं तभी हमारे जीवन में बुढ़ापे का आगमन हो जाता है।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) अंधेरा होने पर चाँद मुसकाता है।

(ख) अंधेरे रजनी में धरती ओस-कणों से धुलती है।

(ग) समय मान और प्राण दोनों हैं।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) समय (ख) (i) फूल

(ग) (ii) समय (घ) (iii) जरा

(5) स्वयं कीजिए।

(6) नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) ओस—अंधेरी रात में धरती ओस-कणों से धुल जाती है।

(*) दीया—एक दीया की रोशनी ही अंधकार को दूर कर देती है।

(*) सूरज—सूरज से हमें प्रकाश व ऊर्जा मिलती है।

(*) तारा—सूर्य हमारे ग्रह से सबसे निकट का तारा है।

(*) दुनिया—ईश्वर ने इस दुनिया को बनाया है।

(7) दिए गए शब्दों में से पुल्लिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग शब्द छाँटकर उपयुक्त गोले में (पु) तथा (र) लिखिए—

चाँद—(पु), सवेरा—(पु), धूल—(पु), ओस—(पु),

पत्ती—(र), डाली—(र), विद्या—(र), फूल—(पु),

समय—(पु), अंधेरा—(पु)

(8) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

सवेरा—सुबह, प्रातः, फूल—पुष्प, कुसुम

रजनी—रात, रात्रि, मान—सम्मान, इज्जत

धनी—अमीर, दौलतमंद, उन्नति—प्रगति, विकास

(9) सही शब्द पर गोला (0) लगाइए—

(क) समुच्चय बोधक, (ख) संबंधबोधक, (ग) निपात (घ) विस्मयादिबोधक
क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(7) सम्मान

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) शालू से विद्यालय की लड़कियाँ इसलिए घृणा करती थीं क्योंकि शालू के पास अच्छे कपड़े, अच्छा बस्ता, अच्छा खाना व उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। स्कूल में सभी बच्चे उसे हीन भावना से देखते थे। उसके साथ की लड़कियाँ उसे 'काली-कलूटी' 'घास वाली' कहकर चिढ़ाती थीं। लेकिन वह उनसे चिढ़ती नहीं थीं। उसे तो शैशव अवस्था से ही ऐसे कड़वे घूंट पीने की आदत पड़ चुकी थी।

(ख) एक दिन जब रिया ने शालू से पूछा, "शालू, क्या तुम वास्तव में काली-कलूटी, घासवाली हो?" "हाँ, हूँ। इसमें बुरी बात क्या है? मैं अपना खर्च स्वयं जुटाती हूँ, मैं तुम्हारी तरह किसी पर भार थोड़ी ही हूँ। फिर रंग बनाना कौन सा हमारे हाथ में है। यह तो भगवान के बनाए रंग हैं। क्या हम इसमें हस्तक्षेप कर सकते हैं? क्या हम इसे नकार सकते हैं?"

(ग) शालू की माँ की इच्छा उसे खूब पढ़ाना था क्योंकि शालू की माँ धन से गरीब जरूर थी लेकिन विचारों की धनी थी। वह उसे पढ़ा-लिखाकर उसके पिता का नाम ऊँचा करना चाहती थी। इसीलिए वह हमेशा शालू साहसपूर्ण और प्रेरणादायक कहानियाँ एवं वीरों की गाथाएँ सुनाती थीं।

(घ) डी.एम. शालू को आमंत्रण देने इसलिए आए थे क्योंकि उसने कला, संगीत और पढ़ाई में पूरे प्रदेश में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। डी.एम. ने कहा कि तुमने अपने परिवार, अपने गाँव तथा अपने विद्यालय का ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। परसों प्रदेश के राज्यपाल तुम्हारा और तुम्हारी पूज्य माता जी का सम्मान करेंगे। यह रहा तुम्हारा आमंत्रण पत्र।

(ङ) शालू के सम्मान में राज्यपाल ने शालू को पुरस्कृत करने के बाद कहा, "मुझे गर्व है कि हमारे देश में शालू जैसी मेहनती और हौनहार छात्राएँ हैं। यह उसकी मेहनत का सम्मान है, आदर्शों का सम्मान है, गरीबी का सम्मान है। देश के सभी छात्र-छात्राओं को शालू के जीवन से सबक लेना चाहिए। इससे बड़ा सम्मान इसकी माँ को दिया जाता है जिन्होंने इसके अन्तर्मन में अपनी प्रेरणा का दीया जलाए रखा।"

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) सकारात्मक (ख) तीन (ग) कस्बे (घ) सराबोर

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) शालू को शोभा ने ताना इसलिए मारा था क्योंकि उसके पास अच्छे कपड़े नहीं थे, वह अच्छा बस्ता नहीं खरीद सकती थी, वह अच्छा खाना नहीं खा सकती थी, उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। तो वह अच्छा छात्र कैसे बन सकती है?

(ख) स्कूल में लड़कियों द्वारा ताना मारने पर शालू को बहुत बुरा लगता था। वह मन-ही-मन सोचती, "क्या गरीब होना सचमुच अभिशाप है? क्या गरीब जीवन में अच्छी छात्रा नहीं बन सकती? गरीबी का संबंध शरीर से तो हो सकता है बुद्धि से तो नहीं। फिर इतिहास में न जाने कितने महापुरुषों के उदाहरण हैं, जो गरीबी झेलकर महान बने हैं। शोभा का क्या है, उसके पिता तो धनवान हैं। उसे अपने माता-पिता, कोठी-कार, नौकर-चाकर व पैसे का घमंड हो सकता है, किंतु ईश्वर तो सब कुछ देखता है, उसके कहने से मुझे निराश नहीं हो जाना चाहिए। इसे चुनौती मानना चाहिए और अपनी सफलता को साकार करके दिखाना चाहिए।" वह मन-ही-मन प्रश्न करती और स्वयं ही उसका हल ढूँढ़ लेती। इस तरह से शालू एक सकारात्मक विचारों वाली छात्रा थी।

(ग) शालू की माँ उसे हमेशा साहसपूर्ण और प्रेरणात्मक कहानियाँ एवं वीरों की गाथाएँ सुनाती थी। कभी-कभी तो शालू कहानी सुनते-सुनते इतनी रोमांचित हो उठती कि उस पात्र का अभिनय करने लगती थी।

(घ) शालू को उसके विद्यालय की लड़कियाँ 'काली-कलूटी' और 'घास-वाली' कहकर चिढ़ाती थीं।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) गाँव में, (ख) (iii) विचारों की धनी
(ग) (i) राज्यपाल ने (घ) (i) सरल
(ङ) (ii) बुराई

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) सही मिलान कीजिए—

घृणा—ईर्ष्या, रोमांचित—उत्साह,
सबक—शिक्षा, अभिशाप—शाप

(7) लिंग बदलकर लिखिए—

छात्र—छात्रा, माता—पिता, नौकर—नौकरानी
लड़की—लड़का, माँ—बाप, बेटी—बेटा

(8) विपरीतार्थक शब्द लिखिए—

गरीब—अमीर, सरल—कठिन, अभिशाप—वरदान, घृणा—प्रेम, स्वर्ग—नरक, ऊँचा—नीचा, सकारात्मक—नकारात्मक, अच्छा—बुरा।

(9) 'ई' प्रत्यय लगाकर नए शब्द लिखिए—

बुरा + ई = बुराई, गरीब + ई = गरीबी,
घमंड + ई = घमंडी, अमीर + ई = अमीरी,
बराबर + ई = बराबरी

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

पुनरावृत्ति प्रश्न-पत्र-1

(पाठ 1 से 7 पर आधारित)

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) भेदभाव से भरे इस संसार में हमें शीतल पवन की तरह बहकर सबको शान्ति प्रदान करनी चाहिए।

(ख) किशन की मृत्यु का प्रमुख कारण अधिक से अधिक जमीन नापने का लालच था।

(ग) पेड़-पौधों को हरा सोना कहा गया है।

(घ) उदय रामेश्वर के दरवाजे पर आकर उन्हें पुकारता है तब प्रताप बाहर आते हैं और वह उन्हें अपने भाई दिवाकर के बारे में पूरी बात बताता है।

(ङ) श्रेणी ने परिक्षित को यह शाप दिया कि आज के सातवें दिन तक्षक के डसने से परीक्षित की मृत्यु हो जाएगी।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) परिवर्तन, (ख) (iii) जमीन का पट्टा

(ग) (iii) सोना (घ) (i) दिवाकर को।

(3) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) असंतुष्ट, (ख) भूक्षरण, (ग) भला, (घ) ठगना, (ङ) मन

(4) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए—

(क) किशन अपने गाँव के लोगों से असंतुष्ट था।

(ख) वृक्ष आँधी-तूफान की तेज गति से नियंत्रित करते हैं।

(ग) मैं अभी अपनी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

(घ) मैंने भी इसे बाजार में देखा है।

(ङ) कभी धूल ही उड़ती है।

(8) राब की मटकी

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) तीनों राब की मटकी की ओर आँखें फाड़कर इसलिए देखने लगे क्योंकि राब की मटकी फूटकर खंड-खंड हो गयी थी, राब का निशान भी बाकी न बचा था। क्योंकि आधी रात को गरजती हुई ऐसी घटा उठी कि मानों प्रलय आ जाएगी, छप्पर चूने लगा। जैसे घर में गंगा-माई ही प्रकट हो गई हों और चारों ओर जल-ही-जल दिख रहा था। छप्पर का फूँस छितरा पड़ा था। घर-गृहस्थी

की चीजें कच्छ-मच्छ की भाँति पानी पर तैर रही थीं।

(ख) “संतान तभी तक अच्छी लगती है जब चार पैसे हों।” स्त्री ने इसलिए कहा क्योंकि ढूँगर ने बालिका को उसे डाँटने के लिए मना किया।

(ग) ढूँगर का मन भारी इसलिए हो गया था क्योंकि बालिका को ओढ़नी खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे।

(घ) रज्जो ने अपनी माँ के गले में दोनों बाहें डालकर कहा, “सब तो नए-नए कपड़े पहनकर मेले में जा रहे हैं, अम्मा। मैं जाऊँ यह ओढ़नी डालकर?” और फिर कई जगह से फटी तथा तार-तार हुई ओढ़नी उसने माँ के सामने कर दी।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) खाट, पत्नी (ख) छाछ (ग) ऊँगलियाँ (घ) एक-दूसरे, दावकर

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) गाँव में छड़ियों का मेला लगा हुआ था।

(ख) रज्जो माँ से ओढ़नी ओढ़ने के लिए जिद्द करने लगी।

(ग) गाँव के घरों में मटके में राब भरी रहती थी।

(घ) रज्जो घर में पानी भर जाने के कारण डर के मारे चीखने लगी।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) ओढ़नी, (ख) (i) बाजार

(ग) (iii) बरसात से (घ) (i) जातिवाचक संज्ञा

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए।

(6) वचन बदलकर लिखिए—

मटकी—मटकियाँ, रोटी—रोटियाँ, ऊँगली—ऊँगलियाँ, स्त्री—स्त्रियाँ, रस्सी—रस्सियाँ, दीवार—दीवारें

(7) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए—

रोना—रुलाई, स्त्री—स्त्रीत्व, बच्चा—बचपन, निराश—निराशा

(8) निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) रोजगार—रोजगार दैनिक खर्चा के लिए आवश्यक है।

(*) मेला—मेला में अनेक प्रकार की मिठाईयाँ मिलती हैं।

(*) रोटी—श्याम रोजी—रोटी की तलाश में घर से बाहर निकल गया।

(9) विपरीत शब्द लिखिए—

रोजगार—बेरोजगार, दुःख—सुख, रोना—हँसना, भारी—हल्का, अच्छी—बुरी, सस्ती—महँगी

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(9) परिवर्तन

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) मास्टर वेदप्रकाश जी बड़े ही विनम्र, आदर्शवादी तथा उच्च विचारोंवाले व्यक्ति थे।

(ख) गाँव में आकर मास्टर जी ने देखा कि इस गाँव में अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाना ही नहीं चाहते थे। उनके पढ़ने लिखने की बात को कोई महत्त्व ही नहीं देता था।

(ग) मास्टरजी ने गाँव की समस्या का मूल कारण गरीबी माना। छोटे-छोटे बच्चों को काम पर लगा दिया जाता जिससे परिवार की आय हो जाती।

(घ) मास्टरजी ने गाँव में ही स्थायी रूप से रहने का निर्णय इसलिए लिया कि वे यह भलीभाँति जानते थे कि भारतवर्ष की अधिकांश जनता गाँवों में ही बसती है। उसे शिक्षित, साक्षर और संस्कारी बनाना देश की बहुत बड़ी सेवा है।

(ङ) उन्होंने सरकारी सूत्रों से संपर्क किया और विद्यालय में सायं के समय एक घंटे के लिए प्रौढ़ पाठशाला खोल ली। मास्टर जी को गाँव का हर व्यक्ति अपना हितैषी मानने लगा था। स्कूल में निरीक्षण के लिए आए निरीक्षक विद्यालय के वातावरण से बहुत प्रभावित हुए।

मास्टर जी की पदोन्नति भी हो गयी। उनके लिए निरीक्षक पद पर नगर में आने का आदेश आया। यह जानकर गाँव वालों की आँखों में आँसू आ गए। मास्टर जी स्वयं भी उनसे जुड़ गए थे। जब सभी ने उनसे न जाने का घोर आग्रह किया, तो वे भी उसे ठुकरा न सके। स्थायी रूप से उसी गाँव में रहने का आदेश प्राप्त कर वहीं रह गए।

(च) देश की सच्ची प्रगति उसे शिक्षित, साक्षर और संस्कारी बनाने से संभव है।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) कामना (ख) चुनौतियाँ, (ग) संस्कारी, (घ) आबादी, (ङ) मुखिया

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) गाँव में नियुक्ति पाकर वेदप्रकाश मास्टर जी को तनिक भी बुरा न लगा, उल्टे अच्छा ही लगा कि कुछ सेवा करने का अवसर मिलेगा।

(ख) मास्टर जी भलीभाँति जानते थे कि भारत वर्ष की अधिकांश जनता गाँवों में बसती है। उसे शिक्षित साक्षर और संस्कारी बनाना देश की बहुत बड़ी सेवा है।

(ग) गाँव वालों को प्रायः यह शिकायत होती थी कि जो अध्यापक यहाँ आते हैं, वे बच्चों को ठीक से पढ़ाते नहीं हैं, अधिकतर छुट्टी पर रहते हैं।

(घ) मास्टर जी को गाँव वाले अपना हितैषी मानने लगे। वे जो भी कहते वे सब वैसा ही करने में जुट जाते।

(ङ) मास्टर जी के गाँव वापस जाने की बात पर गाँव वालों की आँखों में आँसू आ गए।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) प्रौढ़ पाठशाला, (ख) (iii) किताबों में उपयोगी बातें होती हैं। किताबों में बड़ी उपयोगी बातें लिखी रहती हैं, (ग) (iii) शहर का (घ) (iii) हितैषी मानने लगा था (ङ) (iii) परि।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) संकल्प—संकल्प लेने से कोई भी लक्ष्य प्राप्त हो जाता है।

(*) हितैषी—मास्टर जी को सभी लोग अपना हितैषी मानने लगे।

(*) प्रेरित—राम ने श्याम को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

(*) कामना—मेरी कामना है कि तुम सफल हो जाओ।

(*) चौपाल—गाँव के सभी लोग चौपाल पर इकट्ठा होते थे।

(*) निरीक्षण—स्कूल निरीक्षक ने स्कूल का निरीक्षण किया।

(7) निम्नलिखित वाक्यों में से निर्देशित कारक का चुनाव कीजिए—

(क) में—अधिकरण, (ख) से—अपादान

(8) निम्नलिखित में से प्रत्यय छाँटिए—

चमकीला = कीला, प्रोत्साहित = हित,

सिकलकर = कर, अधिकतर = तर

कुशलता = ता, संस्कारी = री

व्यवहारी = री, आदर्शवादी = वादी

(9) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए—

चुनौती = चुनौतियाँ, गली = गलियाँ, लिफाफा = लिफाफे, कुल्हाड़ी = कुल्हाड़ियाँ, बीमारी = बीमारियाँ, जानकारी = जानकारियाँ, नवयुवक = नवयुवकों, शिक्षार्थी = शिक्षार्थियों

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(10) कन्हा अभ्यारण्य से पत्र

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) यह पत्र सुलेखा के बड़े भैया मनोहर ने अपनी छोटी बहन सुलेखा को 'कान्हा अभ्यारण्य' से लिखा है।

(ख) प्राचीनकाल में वन्य पशु-पक्षी ऋषि-मुनियों के आश्रमों में निर्भय होकर विचरण करते थे। उन्हें न कोई सताता था और न ही कोई मारता था।

(ग) कान्हा की वनस्थली रंग-बिरंगे फूलों से सजी तथा हरे वृक्षों से भरी हुई है।

(घ) कान्हा में हवा की गति से भागने वाले चंचल हिरणों का झुंड दिखायी दे जाता है, तो कहीं-कहीं बारहसिंगा दिखाई देते हैं। छोटे-छोटे सींगोंवाली नीलगाय देखकर मन प्रसन्न हो गया। तालाब की ओर रीक्ष भी दिखायी दिए।

पहाड़ी इलाके की ओर बढ़ने पर साँभर मिल गए। विशाल शरीर वाले मोटे-तगड़े भैंसे भी यहाँ दिखे। बगीचे में चीतल भी देखने को मिले। झुंडों में ये वृक्षों के नीचे आराम करते मिल जाते हैं।

और फिर देखा—वनराज सिंह। इसे यहाँ खुले रूप में रखा जाता है। लेखक ने उसे एक जीप में बैठकर देखा। उसने एक दहाड़ भरी तो सारा जंगल काँप उठा।

यहाँ हमने हाथी की सवारी का भी आनंद किया।

जब लेखक हाथी पर थे तब एक बाघ सामने से तेजी से निकल गया। गजब की फूँति थी उसमें।

यहाँ के पक्षियों की गिनती करना असंभव है। अपने पंख फैलाकर नाचता मोर देखकर लेखक का मन नाच उठा।

(ङ) लेखक ने कान्हा में वनराज को खुले रूप में देखा। उसने एक दहाड़ मारी तो सारा जंगल काँप उठा।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) निर्भय, (ख) 160, (ग) 950, (घ) चंचल, (ङ) हाथी

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) अभ्यास्य पशु-पक्षियों के खुले रूप में घूमने की एक खूबसूरत एवं आनंददायक दुनिया होती है।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) अभ्यारण में सभी प्रकार के जानवर मिलते हैं।

(घ) चिड़ियाघर में सभी पशु-पक्षी एक सीमित दायरे में रहते हैं।

और अभ्यारण्य में पशु-पक्षी अनेक किलोमीटर में रहते हैं।

(ङ) कान्हा अभ्यारण्य जबलपुर से 160 किलोमीटर की दूरी पर है। जबलपुर से मंडला होती हुई चिरई डोंगरी तक बढ़िया पक्की सड़क है। वहाँ से लगभग एक घंटे में कान्हा पहुँचा जा सकता है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) ऋषि-मुनियों के आश्रमों में (ख) (i) मंडला के वन-विभाग से (ग) (ii) साँभर (घ) (i) शीतलकाल में।
(ङ) (iii) विशेषण।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) शब्दों को उनके अर्थों से जोड़िए—

प्राचीन—पुराना, गति—चाल, झुंड—समूह, बाड़ा—विशाल, दृश्य—स्वरूप, बगीचा—उपवन।

(7) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए—

वृक्ष—वृक्षों, आश्रम—आश्रमों, वन्यजीव—वन्यजीवों, पशु—पशुओं, बगीचा—बगीचे, मुनि—मुनियों

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

न्याय—अन्याय, ज्ञान—अज्ञान, धर्म—अधर्म, योग्य—अयोग्य, प्राचीन—नवीन, व्यवस्था—अव्यवस्था, निर्भय—भय, पहाड़ी—समतल, दृश्य—रिक्त, दूर—निकट, गिनत—अनगिनत, असंभव—संभव।

(9) नीचे लिखे भाववाचक संज्ञाओं से विशेषण बनाइए—

सहजता—सहज, आनंद—आनंदित, निर्भीकता—निर्भीक, फुर्ती—फुर्तीला, प्रसन्नता—प्रसन्न, अच्छाई—अच्छा, मनोहारी—मनोहर।

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(11) ठुकरा दो या प्यार करो

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) कवयित्री के अनुसार खाली हाथ से यदि सच्चे मन से ईश्वर की पूजा की जाती है तो उनकी कृपा प्राप्त हो जाती है। यही

कवयित्री की पूजा की सर्वश्रेष्ठ विधि है।

(ख) कवयित्री देव चरणों में अर्पित करने के लिए निश्छल प्रेम में पागल होकर खाली हाथ ईश्वर की पूजा करने आई हैं।

(ग) कवयित्री कीर्तन से इसलिए हिचकिचाती हैं क्योंकि उनके स्वर में मिठास नहीं है और मन का भाव प्रकट करने के लिए वाणी में चतुराई नहीं है।

(घ) कवयित्री भगवान को अपना स्वच्छ हृदय दिखाने आई हैं।

(2) नीचे दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए—

(क) कवयित्री ईश्वर से कहती हैं कि हे प्रभु तुम्हारे तो अनेक उपासक हैं जो कई प्रकार से तुम्हारे पास आते हैं और तुम्हारी सेवा में अनेक रंगों की बहुमूल्य भेंट चढ़ाते हैं।

(ख) कवयित्री ईश्वर से कहती हैं कि हे प्रभु मैं एक ऐसी अभागन गरीब हूँ कि तुम्हें चढ़ाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है अतएव मैं हिम्मत जुटाकर मंदिर में तुम्हारी पूजा करने आ गई।

(ग) कवयित्री ईश्वर से कहती हैं कि हे प्रभु मैं तो प्रेमग्न प्रेम की प्यासी हूँ और अपना हृदय दिखाने आई हूँ। मेरे पास जो कुछ भी है सिर्फ यही है जिसे मैं आपको चढ़ाने आई हूँ।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) कवयित्री ईश्वर से यह प्रार्थना कर रही हैं कि हे प्रभु मेरे पास तुम्हें चढ़ाने के लिए सिर्फ मेरा निश्छल एवं प्रेममग्न प्रेम है। यही तुम्हारे चरणों में अर्पित है। यह तुम्हारी ही वस्तु है। चाहो तो इसे स्वीकार करो, ठुकरा दो या मुझसे प्यार करो।

(ख) कवि के अनुसार भक्तजन मंदिर में धूमधाम से गाजे-बाजे सहित मूल्यवान मोती एवं पत्थर भगवान को चढ़ाने के लिए आते हैं।

(ग) कवयित्री मंदिर में खाली हाथ इसलिए गई क्योंकि उनके पास भगवान को चढ़ाने के लिए निश्छल प्रेम के अलावा और कुछ भी नहीं था।

(घ) पूजा और पुजाया कवयित्री को समझने के लिए कहा गया है जिनके पास भगवान को देने के लिए निश्छल प्रेम के अलावा और कुछ भी नहीं है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) समर्पण का भाव, (ख) (ii) भिन्न-भिन्न भाव और पूजा सामग्री लिए होते हैं। (ग) (ii) कवयित्री

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों को उनके अर्थों से जोड़िए—

उपासक—भक्त, वाणी—बोली, अर्पित—देना, चतुर्थ—चार, कीमती—बहुमूल्य, असहाय—बेबस, देवालय—मंदिर

(7) नीचे दिए गए शब्दों से तीन-तीन शब्द बनाइए—

हाथ—हाथी, हथेली, हाथिनी

देव—देवता, देव पुरुष, देवतुल्य

रंग—रंगीन, रंगीला, रंगहीन

हार—हारना, हारतुल्य, हारते

(8) तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए—

ईश्वर—देवता, भगवान, ईश्वर

सरस्वती—वीणावादिनी, स्वतंत्र, ज्योतिर्मय

फूल—पुष्प, कुसुम, सुमन

जल—नीर, पानी, अंबुज

मंदिर—देवालय, शिवालय, देवस्थली

(9) निम्नलिखित शब्दों को विलोम शब्द लिखिए—

साहस—डरपोक, देव—दानव, मीठा—खट्टा, खाली—भरा, मधुर—कर्कश, भिखारी—राजा

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(12) बहुरूपिया

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) बहुरूपिए अब बहुत कम देखने को मिलते हैं। किसी समय रईसों और अमीरों का मनोरंजन करने वाले बहुरूपिए प्रायः ही नगर में पाए जाते थे। अनेक रूप बनाकर ठीक उसी तरह का व्यवहार करके ये प्रायः लोगों को भ्रम में डाल देते थे। यही उनकी सफलता का राज था।

(ख) बहुरूपिया कभी धोबी का रूप बनाकर आते थे, कभी डाकिए का एवं कभी साधु आदि का। धोखा खाने वाला रईस इन्हें इनाम देता था।

(ग) एक बार एक बहुरूपिए ने साधु का रूप बनाया। सिर पर जटाएँ, नंगे शरीर पर भभूत, माथे पर त्रिपुंड, कमर में लँगोटी। उसके रूप में कहीं कोई कसर नहीं थी और वह एकदम संसार-त्यागी साधु ही लगता था। उसने ऐसा यश-कीर्ति प्राप्त करने के लिए और इनमें प्राप्त करने के लिए किया। लेकिन कभी-कभी उसका मन धिक्कारने लगता कि यदि वह जिंदगी भर साधु बना रहा तो अपने असली पेशे के साथ बेईमानी करेगा। इसी सोच-विचार में उसके दिन निकलने लगे।

(घ) बहुरूपिए ने सेठ की दौलत लेने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि उसने सोचा कि यदि एक साधु ऐसा करेगा तो लोगों का साधुओं से विश्वास उठ जाएगा।

(ङ) सेठ को बहुरूपिए की सच्चाई का पता तब चला जब बहुरूपिए ने सेठ द्वारा दिए जाने वाले धन को लेने से मना कर दिया।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) साधु (ख) डेरा (ग) सफलता (घ) सेठ

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) बहुरूपिए से अभिप्राय अपना वास्तविक रूप छोड़कर किसी भी विशेष रूप को धारण करना है।

(ख) बहुरूपिए ने साधु का वेश धारण किया।

(ग) बहुरूपिया ने सेठ को रोज यह उपदेश दिया करता कि यह संसार माया है। धन का लोभ आदमी को आदमी नहीं रहने देता। जितना धन बढ़ता है लोभ भी उतना ही बढ़ता जाता है। सच्चा सुख, धन का त्याग करने में है, इस मोह-माया से उठकर भगवान के चरणों में ध्यान लगाने में है। सोना तो मिट्टी है और मिट्टी का मोह पालकर आज तक किसी ने शांति नहीं पायी। धीरे-धीरे साधु के उपदेशों का प्रभाव सेठ पर पड़ने लगा।

(घ) सेठ अपना सारा धन बहुरूपिए को देने इसलिए पहुँचा क्योंकि बहुरूपिए के वेश में साधु के आदेश से सेठ को सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया था और इस संसार से उसका मन फिर गया था। झूठ-कपट से उसने जो भी धन कमाया था, वह सब सेठ ने साधु की चरणों में रख दिया। और इस धन को गरीबों में बाँटने या मंदिर बनवाने की गुजारिश की।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (i) साधु का, (ख) (ii) सेठ की पत्नी

(ग) (ii) सेठानी, (घ) (iii) सेठ

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों की सहायता से वाक्य बनाइए—

(*) बहुरूपिया—एक बहुरूपिया श्याम के घर आया था।

(*) साधु—साधु—संत संसार की मोह-माया त्याग देते हैं।

(*) तपस्या—बिना तपस्या किए अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं होती है।

(*) सफलता—परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

(*) लोभ—किसी को भी लोभ नहीं करना चाहिए।

(*) संपत्ति—सोहन अपार संपत्ति का स्वामी है।

(7) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए—

सेठ—सेठानी, पुजारी—पुजारिन, साधु—साध्वी, चिड़िया—चिड़ी, बूढ़ा—बूढ़ी, धोबी—धोबिन

(8) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

अमीर—गरीब, कीर्ति—अपकीर्ति, सफलता—असफलता, प्रसन्न—अप्रसन्न, दूर—नजदीक, शिष्य—गुरु

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(13) बम्बई : एक दर्शनीय स्थल

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) मुंबई शहर का नाम इस नगर की आधिष्ठात्री देवी मुंबा देवी के नाम पर पड़ा।

(ख) मुंबई भारत की फिल्मी राजधानी इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहाँ जितनी फिल्में बनती हैं, उतनी देश के किसी नगर में नहीं।

(ग) मुंबई को उसकी तड़क-भड़क तथा ग्लैमर के कारण मायानगरी कहते हैं। एक नौजवान या नवयुवती मुंबई जाए तो फिर उसके लिए वहाँ की माया को काटकर बाहर आना कठिन होता है। कितने वहाँ फिल्मों में भाग्य आजमाने के लिए जाते हैं। ये भूखे पेट, फुटपाथों पर सोकर भी संघर्ष करते हैं। सफलता तो कम ही को मिलती है, अधिकांश वापस लौटने के बदले आधा पेट खाकर ही यहाँ जीवन काट देते हैं। कुछ बुद्धिमान लोग फिल्म के अन्य छोटे-मोटे कामों में आ जाते हैं। होटलों-मोटलों में वेटर और नौकर बन जाते हैं, पर होकर रहते हैं मुंबई के ही। यही है इस माया नगरी का मायावी आकर्षण।

(घ) मुंबई आज देश के सबसे बड़े महानगरों में से एक है। यह वाणिज्य का बहुत बड़ा केंद्र है। यहाँ के बंदरगाह पर जो देश का सबसे बड़ा बंदरगाह है, बाहरी देशों से आने वाले अधिकांश पानी के जहाज लगते हैं। यहाँ के विशाल और आधुनिक हवाई अड्डों से ही विदेशों के लिए सबसे अधिक वायुयान उड़ते हैं। हवाई जहाजों के उतरने-चढ़ने का यही सर्वाधिक सुविधाजनक और प्रिय स्थान है। सबसे बड़ी बात है कि यह भारत की फिल्मी राजधानी है।

(ङ) देश की स्वतंत्रता आंदोलन में उसका प्रथम अधिवेशन सन् 1885 में बंबई में ही संपन्न हुआ।

बाल गंगाधर तिलक उस समय एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और काँग्रेस नेता थे। अंग्रेजों की क्रूरता के विरुद्ध उन्होंने जोरदार आंदोलन चलाया यहाँ तक कि अपनी लोकप्रिय पत्रिका केसरी में उन्होंने इसके विरुद्ध उन्होंने आग उगलती टिप्पणियाँ भी की।

(च) मुंबई के संबंध में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना यह है कि सन् 1892 में यहाँ भीषण प्लेग फैला जिसके चपेट में पूना तक आ गया। तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने इससे निबटने के लिए सख्त कदम उठाए। रोगियों को तो उसने नगर से बाहर किया ही, पूर्ण स्वस्थ व्यक्तियों को भी साधारण संदेश के आधार पर ही बाहर कर दिया। स्पष्टतः अंग्रेजों को अपने प्राणों का भय था और छूत वाली इस बीमारी से भयभीत होकर वे ऐसे कड़े कदम उठा रहे थे।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) मुंबा, मुंबई (ख) महानगरों (ग) व्यावसायियों, (घ) फिल्मी, (ङ) मायानगरी

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) अधिष्ठात्री देवी मुंबा देवी के नाम पर मुंबई नगर का नाम मुंबई पड़ा।

(ख) अंग्रेजों के समय मुंबई नाम बंबई (बॉम्बे) था।

(ग) मुंबई एक टापू पर बसा है।

(घ) मुंबई को उसकी तड़क-भड़क के कारण फिल्मी मायानगरी के नाम से पुकारा जाता है।

(ङ) भारतीय आयात-निर्यात का केंद्र मुंबई है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) मुंबई, (ख) (i) परपेन्डिक्यूलर भवन का

(ग) (ii) मुंबई (घ) (iii) मुंबई (ङ) (ii) अरब सागर।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों को प्रयोग करके वाक्य बनाइए—

(*) बंदरगाह—मुंबई का बंदरगाह देश का सबसे बड़ा बंदरगाह है।

(*) आधुनिक—अमीर समाज में लोग आधुनिक वस्त्र पहनते हैं।

(*) प्रतियोगिता—रोजगार संबंधी प्रतियोगिता बहुत कठिन होती है।

(*) मायानगरी—मुंबई को उसकी तड़क-भड़क (ग्लैमर) के कारण मायानगरी कहते हैं।

(*) स्वतंत्रता—हमारे देश भारत को 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी।

(7) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए—

प्रमाणित = प्रमाण-इत, प्रधानता = प्रधान-ता
सहमति = सहमत-इ, सफलता = सफल-ता
व्यापारी = व्याधार + ई

(8) संधि विच्छेद कीजिए-

महाराष्ट्र = महा + राष्ट्र, बंगरगाह = बंदर + गाह
सुविधाजनक = सुविधा + जनक, मायानगरी = माया + नगरी
राजकुमारी = राज + कुमारी

(9) वचन बदलकर लिखिए-

देवी = देवियाँ, दर्शकों = दर्शक, होटल = होटलों
पत्रिका = पत्रिकाएँ, चट्टान = चट्टानें, अंग्रेज = अंग्रेजों।
क्रियात्मक गतिविधियाँ-स्वयं कीजिए।

(14) सुनहरा नेवला

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) एक दिन नेवले ने निश्चय किया कि वह एक ऐसा स्थान खोजेगा, जहाँ दयालु और निःस्वार्थ लोग रहते हैं। ऐसा स्थान जहाँ बड़े त्याग हुए हों, निर्धनों को दान देकर, भूखों को भोजन खिलाकर लोग स्वयं भूखे रह जाते हों। यदि ऐसी पवित्र धरती पर वह लोट-पोट हो जाए, तो उसका शरीर सुनहरा हो जाएगा।

(ख) नेवले ने देखा, पाँचों पांडव अपनी विजय की खुशी में अन्न-वस्त्र दान कर रहे थे। सभी गरीबों को एकत्र कर उन्हें भोजन कराना प्रारम्भ किया। देश के कोने-कोने से अभावग्रस्त लोग आ रहे थे और पांडव सभी को अन्न, वस्त्र और धन दान कर रहे थे। लोग प्रसन्न होकर वापस लौट रहे थे।

(ग) नेवले ने पांडवों के त्याग की लालसा स्वयं को वंचित कर दूसरों को देने अर्थात् महान् व्यक्तियों से की।

(घ) ब्राह्मण परिवार ने अपना सत्तू अपने घर आए अतिथि को खिला दिया था।

(ङ) ब्राह्मण परिवार की मृत्यु अतिथि को अपना पूरा सत्तू खिलाने से भूख के कारण हुई।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए-

(क) धर्म (ख) अतिथि (ग) पिता (घ) स्त्री (ङ) प्रतीक्षारत

(3) सोच-समझकर बताइए-

(क) प्रस्तुत काल की घटना प्राचीन काल की है।

(ख) नेवला कुरुक्षेत्र के निकट किसी गाँव में रहता था।

(ग) नेवले प्रायः भूरे रंग में पाए जाते हैं।

(घ) एक असामान्य घटने पर नेवले का आधा शरीर सुनहरा हो गया था, परंतु आधा सामान्य रंग का ही था। उस नेवले की इच्छा थी कि वैसी ही असामान्य घटना कहीं और भी घट जाए जिसके कारण उसका बाकी शरीर भी सुनहरा हो जाए।

(ङ) अपनी इच्छापूर्ति के लिए वह गाँव-नगर, देश-विदेश, तीर्थ-धाम सभी स्थानों पर धूमा, वहाँ की भूमि पर लोट-पोट हुआ, परंतु उसके शरीर के रंग में परिवर्तन नहीं हुआ। वास्तव में वह ऐसी धर्मप्राण भूमि की खोज में था, जहाँ धर्म का मौलिक रूप प्रकट होता हो, मात्र दिखावे का नहीं, बाह्य आडंबर का नहीं अपितु जहाँ धर्म के प्राण बसते हों, परंतु अब तक वह ऐसी भूमि न खोज पाया था।

एक दिन उसने निश्चय किया कि वह ऐसा स्थान खोजेगा, जहाँ दयालु और निःस्वार्थ लोग रहते हों। निर्धनों को दान देकर, भूखों को भोजन खिलाकर लोग स्वयं भूखे रह जाते हों। यदि ऐसी पवित्र धरती पर वह लोट-पोट हो जाए, तो उसका सारा शरीर सुनहरा हो जाएगा।

नेवले को ज्ञात हुआ कि महाभारत को युद्ध में विजयी होकर महाराज युद्धिष्ठिर भाइयों सहित यज्ञ कर रहे हैं। वहाँ निर्धनों को दान तथा भूखों को भोजन दिया जा रहा है। “अवश्य ही यह पवित्र कार्य है,” नेवले ने सोचा और कुरुक्षेत्र जा पहुँचा।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) (iii) यज्ञ कर रहे हैं (ख) (iii) त्याग (ग) (iii) चार भाग (घ) (iii) अतिथि

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) आडंबर—पाखंडी सिर्फ आडंबर करते हैं।

(*) प्रण—प्रणायाम करने से प्राण—वायु बढ़ती है।

(*) विजय—विजयदशमी का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

(*) त्याग—बिना त्याग व परीक्षण के बड़ी सफलता नहीं प्राप्त होती है।

(*) आनंद—त्योहारों ने पूरा परिवार आनंद मनाता है।

(*) प्रतीक्षा—श्याम राम की प्रतीक्षा कर रहा था।

(7) विलोम शब्द लिखिए—

निकट—दूर, निराश—उम्मीद, निःस्वार्थ—स्वार्थ

अभावग्रस्त—भरापूरा, दयालु—क्रूर, पवित्र—अपवित्र,

निर्धन—धनी, वरदान—शाप, न्याय—अन्याय,

सामान्य—असामान्य, श्रेष्ठ—बीच, अपयश—यश

(8) भाववाचक संज्ञा बनाइए—

दयालु—दयालुता, अतिथि—अतिथेय, निर्धन—निर्धनता, पीड़ित—पीड़ा, धार्मिक—धार्मिकता, त्यागी—त्याग।

(9) विशेषण छाँटकर लिखिए—

कठोर हृदय = कठोर, पवित्र भूमि = पवित्र

अन्यायी राजा = अन्यायी, बूढ़ा आदमी = बूढ़ा

भूखा अतिथि = भूखा, धार्मिक लोग = धार्मिक

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

पुनरावृत्ति प्रश्न—पत्र—2

(पाठ 8 से 14 पर आधारित)

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) डूंगर का मन इसलिए भारी हो गया क्योंकि अपनी बेटी को ओढ़नी खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे।

(ख) देश की सच्ची प्रगति उसे शिक्षित, साक्षर और संस्कारी बनाने से संभव है।

(ग) प्राचीनकाल में वन्य पशु-पक्षी ऋषि-मुनियों के आश्रमों में निर्भय होकर विचारण करते थे। उन्हें न कोई सताता था और न ही कोई मारता था।

(घ) कवियत्री के अनुसार भक्तजन मंदिर में धूमधाम से गाजे-बाजे सहित मूल्यवान मोती एवं पत्थर भगवान को चढ़ाने के लिए आते हैं।

(ङ) बहुरूपिए कभी धोबी का रूप बनाकर आते थे, कभी डालिए का एवं कभी साधु आदि का। धोखा खाने वाले रईस इन्हें इनाम देते थे।

(2) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (i) बाजार (ख) (iii) परि

(ग) (iii) विशेषण (घ) (ii) कवियत्री

(ङ) (ii) सेठ की पत्नी

(3) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) उँगलियाँ (ख) चुनौतियाँ (ग) चंचल

(घ) सेठ (ङ) प्राचीन

(4) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए—

(क) हम तो रोज छाल में राब डालकर पीते हैं।

- (ख) संतान भी तभी अच्छी लगती है जब चार पैसे हों।
- (ग) कुछ सेवा करने का अवसर मिलेगा।
- (घ) सेठ आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा।
- (ङ) ब्राह्मण ने उसके हिस्से की भी सत्तू अतिथि को खिला दी।

(15) स्वयं का निर्माण

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) अवगुणों को दूर करने और सद्गुणों को करने का उपाय निरंतर नहीं किया जाएगा तो अवगुण बने ही रहेंगे और सद्गुण नहीं आएँगे।

(ख) गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म को मानने वाले थे।

(ग) यदि अपने अवगुणों को बलवान न बनाएँ तो अवगुण अपनी मौत स्वयं ही मर जाएँगे।

(घ) यदि हमारी प्रकृति अस्वस्थ है, तो हमें अपने ही 'स्वस्थ स्वरूप' की भावना करनी चाहिए और यथावकाश अपने मन में अपने 'गर्मी स्वरूप' का चित्र देखना चाहिए। अचिरकाल में ही हमारी प्रकृति बदल जाएगी।

(ङ) सभी के प्रति मैत्री, गुणियों के प्रति श्रद्धा, दुःखियों के प्रति दया, दुष्टों के प्रति उपेक्षा सचमुच इससे बढ़कर ब्रह्म-विचार की कल्पना नहीं की जा सकती।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) सामाजिक (ख) व्यक्ति (ग) आदत (घ) समूह (ङ) निर्माण

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) गौतम बुद्ध पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान की मुद्रा में बैठे हैं।

(ख) बौद्ध धर्म में व्यायाम के चार अंग कहे गए हैं।

(*) इस बात की सावधानी रखना कि अपने में कोई अवगुण न आ जाए।

(*) इस बात का प्रत्यन करना कि अपने अवगुण दूर हो जाएँ।

(*) इस बात की सावधानी रखना कि अपने में सद्गुण चले आएँ।

(*) इस बात की सावधानी रखना कि अपने सद्गुण चले न जाएँ।

(ग) सरकस वाले पतले-पतले तारों पर विश्वास करते हैं कि वे चल सकते हैं, तदनुसार अभ्यास करते हैं और वे चल ही लेते हैं।

(घ) तरुण अपने शरीर को बलवान बनाना चाहते हैं। खाने-पीने के साधारण नियमों का ख्याल नहीं करता, स्वच्छ वायु में नहीं सोता, व्यायाम नहीं करता, केवल भावना के ही बल पर बलवान होना चाहते हैं, यह असंभव है।

भावना अपना काम करती है, किंतु अकेली भावना खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम सभी की जगह नहीं ले सकती है।

जो बलवान बनने की सच्ची भावना करेगा, वह अपने खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम सभी की चिंता करेगा। इन अर्थों में भावना को स्वार्थ और अधिकार कहा जाता सकता है।

(ङ) गंदी हवा को निकलने का सबसे अच्छा उपाय एक ही है। सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खोलकर स्वच्छ वायु को अंदर आने देना।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) भदंत आनंद कौसल्यायन (ख) (i) अरस्तू ने

(ग) (iii) दोनों के द्वारा (घ) (ii) सुधर जाएगा

(ङ) (i) महत्त्व अधिक है।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) सामाजिक—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

(*) व्यायाम—दैनिक व्यायाम शरीर को स्वस्थ रखता है।

- (*) सद्गुण—सद्गुण को अपनाने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।
- (*) संकल्प—हमें अवगुण दूर करने का संकल्प करना चाहिए।
- (*) प्रकृति—प्रकृति के सभी निर्देशों का पालन करना चाहिए।
- (*) भावना—मैं तुम्हारी भावना समझ रहा हूँ।
- (*) महत्त्व—सत्य के महत्त्व को सबको समझना चाहिए।

(7) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए—

प्रख्यात—विख्यात, प्रसिद्ध विश्वास—भरोसा, समझदारी
स्वच्छ—साफ, निर्मल प्रत्येक—हर एक, प्रति एक
आदत—स्वभाव, प्रकृति व्यक्ति—इंसान, मनुष्य

(8) निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करिए—

पुनर्निर्माण = पुनः + निर्माण प्रत्येक = प्रति + एक
प्रतिकूल = प्रति + कूल प्रवृत्ति = पः + वृत्ति
सद्गुण = सत् + गुण महत्त्व = महा + इत्त्व

(9) निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बताइए—

अच्छा = अच्छाई, विश्वासी = विश्वास, बुरा = बुराई, गंभीर = गंभीरता, स्वच्छ = स्वच्छता, दुष्ट = दुष्टता, असफल = असफलता
क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(16) सत्कर्तव्य

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) सत्कर्तव्य से कवि का यह तात्पर्य है कि हमें सदैव स्वार्थरहित होकर अपना जीवन दूसरों की सेवा में दूसरों के हित में तथा देश के प्रति अपने सत्कर्तव्य निभाने में अर्पित करना चाहिए।

(ख) जीवन भर आतप सह वसुधा पर सभी सचर-अचर प्रकृति द्वारा सौंपे हुए अपने-अपने कर्म द्वारा छाया करते हैं।

(ग) वृक्ष पर लगा पत्ता सभी को छाया प्रदान करने में तत्परता से लगा रहता है।

(2) दी गई पंक्तियों का भावार्थ लिखिए—

(क) कवि यहाँ बताते हैं कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सिर्फ अपने लिए सोचते हैं, अपने लिए मौज-मस्ती वाले गीत गाते रहते हैं, अपने लिए पीते हैं, खाते हैं, सोते हैं, जागते हैं, हँसते हैं और सुख पाते हैं।

(ख) कवि यहाँ बताते हैं कि कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनका समाज के दूसरे हिस्से से कोई मतलब नहीं होता है और वे सिर्फ अपने स्वार्थ को ही लगातार पूरा करते रहने में अपना मान-सम्मान समझते हैं। लेखक इन्हें इस बात पर सोचने-विचार के लिए कहते हैं कि संसार में और कौन तुम्हारी तरह अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए विवश है।

(ग) कवि यहाँ इन्सान को समझाते हैं कि तुम्हें बुरा नहीं मानना चाहिए और एक बार गंभीरतापूर्वक अपने मन में सोचना चाहिए कि क्या तुमने अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने कर्तव्य को समाप्त कर दिया है।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) संसार को कवि ने मनुष्य के लिए एक परीक्षा-स्थल बताया है। परीक्षा की घड़ी में कठिन प्रश्न देखकर मन दुःखी होता है लेकिन उससे घबराना नहीं चाहिए। बल्कि अपने अद्भुत बौद्धिक बल से उस समस्या का निदान करना चाहिए।

(ख) कवि ने कविता में स्वार्थी एवं कर्तव्य पथ से विमुख लोगों को स्वार्थ-विवश जीवन जीने वाला बताया।

(ग) मनुष्य को अपने जीवन के प्रति यह विचारना चाहिए कि हम मनुष्य हैं और असीमित बुद्धि लेकर पैदा हुए हैं।

क्या हमें इस संसार में उद्देश्य रहित रहना चाहिए या इस संसार में असीमित बुद्धि लेकर आने के उद्देश्य को जानना चाहिए।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) अपने गुण धर्म के अनुसार कर्म में लीन हैं। (ख) (i) माता-पिता के (ग) (iii) निजस्वार्थ की पूर्ति में जीवन व्यतीत करता है जो निरुद्देश्य जीवन जीने के समान है। (घ) (i) क्या निजहित के लिए जी कर ही उसने कर्तव्य की इतिश्री मान ली है?

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) स्वकर्म—छोटा पत्ता भी स्वकर्म को पूरी तरपरता से पूरा करता है।

(*) तुच्छ—तुच्छ बुद्धि को लोग कभी बड़ा कार्य नहीं कर सकते हैं।

(*) कर्तव्य—हमें कभी भी अपने कर्तव्य पथ से विमुख नहीं होना चाहिए।

(*) स्वार्थ—महान लोग व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए जीवन नहीं जीते हैं।

(*) विकल—विकल मन हमारी क्षमता को कम कर देता है।

(7) विपरीतार्थक शब्द लिखिए—

स्वार्थ = निःस्वार्थ, अमृत = विष, कठोर = मुलायम, लघु = दीर्घ, निश्चित = अनिश्चित, शांति = अशांति।

(8) लिंग निर्धारण कीजिए—

जाति = स्त्रीलिंग, वसुधा = स्त्रीलिंग, रवि = पुल्लिंग

तन = पुल्लिंग, तृण = पुल्लिंग, जग = पुल्लिंग

बुद्धि = स्त्रीलिंग, मनुष्य = पुल्लिंग, मेधा = पुल्लिंग

(9) पर्यायवाची शब्द लिखिए—

जग = संसार, विश्व, दुनिया वसुधा = धरा, पृथ्वी, भूमि

सुधा = अमृत, सोम, पीयूष

(10) भाववाचक संज्ञा बनाइए—

स्व = स्वर्ग, लघु = लघुत्तम, सहज = सहजता,

अपना = अपनापन, निज = निजता, बुरा = बुराई

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(17) प्रकाश

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) व्यापारी अपने पुत्रों की परीक्षा इसलिए लेना चाहता था कि उसने निश्चय किया कि अपनी संपत्ति को दोनों पुत्रों में नहीं बाँटेगा, बल्कि जो उनमें से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध कर देगा, उसे ही सारी संपत्ति का उत्तराधिकारी बना देगा। अब समस्या यह थी कि उनकी परीक्षा कैसे ली जाए कि दोनों में से कौन अधिक बुद्धिमान है।

उसने दोनों पुत्रों को बुलाया और एक-एक रुपया दोनों को देते हुए बोला, “यह लो और अलग-अलग बाजार जाओ। इस एक-एक रुपए से कोई ऐसी चीज खरीदकर लाओ जो इस घर को भर दे। ध्यान रहे, तुम्हें एक रुपए से अधिक खर्च नहीं करना है।

(ख) दोनों भाईयों ने एक-एक रुपया लिया और चल दिए। पहला युवक बाजार में इधर-उधर फिरता रहा, परंतु उसे कुछ भी ऐसा न मिला, जिससे उसके उद्देश्य की पूर्ति हो सके। वह पूरे दिन घूमता रहा, उसने सब दुकानें देखी, परंतु उसे कुछ न मिला। उसे अधिकाधिक विश्वास होता जा रहा था कि उसके पिता की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है, इसी कारण उन्होंने एक रुपए से घर भर जाने वाली वस्तु खरीदने की बात कही। वह निराश होकर अपने खोज का कार्य छोड़ने ही वाला था कि उसे भूसे से लदी हुई एक बैलगाड़ी दिखाई दी। उसने सोचा, कुछ आशा प्रतीत होती है, मैं नहीं जानता कि एक रुपये में कितना भूसा खरीदूँ।

वह गाड़ीवान के पास गया और भूसे की कीमत के बारे में पूछा। वह सारा भूसा एक रुपए में खरीदने में सफल हो गया। भूसे से लदी उस गाड़ी को वह घर लाया। पिता घर पर ही थे। बड़ी आशा से उसने घर में भूसे का ढेर लगाया। जब भूसा घर के भीतर आ गया, तो उसने पाया कि पूरे घर को भर देने की बात तो अलग थी, वह तो फर्श भी नहीं ढक सका था। पिता सब कुछ देखते रहे।

जब दूसरा पुत्र रुपया लेकर बाहर निकला, तो वह सीधा बाजार नहीं गया। ऐसा करने की बजाए वह बाजार के समीप एक स्थान पर बैठ गया और बहुत देर तक बैठा हुआ वह सोचता रहा कि एक रुपए में क्या खरीद पाना संभव है। अंत में शाम के समय उसके मस्तिष्क में एक विचार आया। एक रुपया लेकर वह तेजी से बाजार की ओर गया और दुकान पर पहुँचा, जहाँ मोमबत्तियाँ बिकती थीं। उसने अपना रुपया मोमबत्तियों पर खर्च कर दिया, जिससे उसे काफी संख्या में मोमबत्तियाँ मिल गईं।

मोमबत्तियाँ लेकर घर लौटा जब वह घर पहुँचा तो उसका बड़ा भाई बेचैनी से खड़ा सामने फर्श पर फैले भूसे की ओर देख रहा था। अब अंधेरा होने लगा था। दूसरे पुत्र ने जल्दी-जल्दी हर कमरे में दो-दो, तीन-तीन मोमबत्तियाँ जलाकर खड़ी कर दी। तुरंत ही सारा घर प्रकाश से भर गया।

(ग) दोनों पुत्रों में छोटा पुत्र सफल हुआ क्योंकि अपने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए मोमबत्तियों की रोशनी से पूरे घर को प्रकाशवान बना दिया।

(घ) हम सभी एक बड़े घर में रहते हैं, जिसे भारतवर्ष कहते हैं। हममें से प्रत्येक को, कुछ को एक रुपया, कुछ को दो रुपए, कुछ को तीन और कुछ को उससे भी अधिक रुपए दिए गए हैं। ये ऐसे रुपये ही हैं जिनसे हम कोई वस्तु खरीद सकें, बल्कि ये विभिन्न शक्तियाँ हैं, जो हमें दी गई हैं। हममें से प्रत्येक के पास शारीरिक शक्ति, बौद्धिक योग्यता और चारित्रिक बल है, जिनका प्रयोग किया जा सकता है। यदि हम अच्छे नागरिक बनना चाहते हैं, तो हमें अपनी शक्तियों और योग्यताओं का प्रयोग अपने देश के कोने-कोने में प्रकाश फैलाने के काम में लगा देना चाहिए अर्थात् हम स्वयं को देश की सेवा में लगा दें।

(2) सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) अमरावती (ख) दो (ग) एक-एक (घ) मोमबत्तियाँ (ङ) अंधेरा

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) व्यापारी अमरावती नगर में रहता है।

(ख) व्यापारी बड़ा अनुभवी और दूरदर्शी था, ऐसा पारखी नजर कि कभी धोखा न खाए।

(ग) व्यापारी का नगर में बड़ा सम्मान था। एक मामूली आदमी से वह नगर सेठ बन गया था, बिना कोई हेरा-फेरी किए। सीधे रास्ते पर चलकर अकूत दौलत का स्वामी बन बैठा था। समय के साथ धन-वैभव बढ़ता ही गया।

(घ) व्यापारी के दो पुत्र थे।

(ङ) व्यापारी ने पुत्रों की बुद्धिमत्ता जाँचने के लिए दोनों को बुलाया और दोनों को एक-एक रुपया देते हुए बोला, “यह लो और अलग-अलग बाजार जाओ। इस एक-एक रुपए से कोई ऐसी चीज खरीदकर लाओ जो इस घर को भर दे। ध्यान रहे तुम्हें एक रुपए से अधिक खर्च नहीं करना है।”

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) अमरावती में (ख) (i) पर्याप्त था (ग) (ii) नहीं हो सकती थी (घ) (i) भाववाचक संज्ञा

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

दुःख = कष्ट, शीघ्र = जल्दी, सशक्त = मजबूत, अकूत = अत्यधिक, कुशल = ठीक, सुलभ = उपलब्ध

(7) भाववाचक संज्ञा बनाइए—

चतुर = चतुराई, सुखी = सुख, स्वस्थ = स्वास्थ्य, निराश = निराशा, बुद्धिमान = बुद्धिमत्ता, प्रसन्न = प्रसन्नता।

(8) निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

(*) अस्वस्थ—बाहरी भोजन करके श्याम अस्वस्थ हो गया था।

(*) उन्नति—परीश्रम से ही उन्नति संभव है।

(*) शिष्ट—अर्जुन शिष्ट धनुर्धारी थे।

(*) सुखी—मेरा परिवार सुखी परिवार है।

(*) निराश—निराश मन से बड़े लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है।

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(18) उमंग और उल्लास का पर्व दीपावली

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) दीपावली का उत्सव मानव-चित्त के उमंग और उल्लास का संदेश दोहराता है।

(ख) आज से हजारों वर्ष पहले मनुष्य ने निश्चय किया कि वह दरिद्रता की अवस्था में नहीं रहेगा, वह सामाजिक रूप में समृद्ध रहेगा, एक व्यक्ति नहीं, एक परिवार नहीं, एक जाति भी नहीं बल्कि समूचा मानव-समाज समृद्धि चाहता है, अदारिद्र्य चाहता है,

अमंगल का अंत चाहता है, उल्लास और उमंग चाहता है। दीपावली का उत्सव उसी सामाजिक मंगलेच्छा का दृश्यमान मूर्त रूप है। समूचा समाज आज दरिद्रता के अभिशाप से मुक्ति चाहता है, अभाव के शिकंजे से छूटना चाहता है।

(ग) जिस रात में चंद्रमा पूरी तरह गोल रहता है उस रात को पूर्णिमा की रात कहते हैं।

(घ) आज मनुष्य दीपावली में लक्ष्मी पूजा करते समय वास्तव में दरिद्रता की पीठ पर बैठकर दरिद्रता दूर करने की पूजा करता है।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) भारत (ख) उमंग, उल्लास (ग) काली (घ) दुर्भाग्य।

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) दीपावली के दिन लक्ष्मी-पूजा की जाती है।

(ख) दीपावली को लक्ष्मी-पूजा, काली-पूजा, महामाया-पूजा भी कहा जाता है।

(ग) अब व्यक्तिगत प्रयत्नों का जमाना लद गया है।

(घ) दीपावली का पर्व आश्विन माल के पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) काली की (ख) (iii) इन दोनों की (ग) (ii) पूर्णिमा को (घ) (i) दीप + अवली।

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए—

(*) त्योहार—दशहरे का त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का त्योहार है।

(*) उल्लास—पर्व मनुष्य का जीवन में उल्लास का संचार करते हैं।

(*) उमंग—चित्त के उमंग से कठिन कार्य भी आसान हो जाते हैं।

(*) अमर—इस संसार में कोई भी अजर-अमर नहीं है।

(*) सामाजिक—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

(7) विलोम शब्द लिखिए—

धर्म—अधर्म, शुभ—अशुभ, जीवनकाल—मृत्युकाल, शक्तिशाली—कमजोर, अदाद्रिय—दारिद्र्य, भय—निर्भय

(8) पर्यायवाची शब्द लिखिए—

त्योहार—पर्व, लक्ष्मी—धन, दिन—दिवस, मनुष्य—मानव, वर्ष—साल

(9) उपसर्गों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द बनाइए—

परा = पराक्रम, परावर्तन अति = अतिशय, अतिक्रमण

प्र = प्रकोप, प्रतीक अनु = अनुकंपा, अनुपालन

अन = अनजान, अनपका

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(19) सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए—

(क) राजा हरिश्चंद्र ने स्वप्न में अपना राज्य मुनि विश्वामित्र को दान देते हुए देखा।

(ख) विश्वामित्र ने एक माह में दक्षिणा न मिलने पर हरिश्चंद्र के ऊपर अपना कठिन ब्रह्मांड गिराने की चेतनावनी दी।

(ग) हरिश्चंद्र ने दक्षिणा हेतु धन की व्यवस्था अपने पत्नी शैल्या व पुत्र रोहित को एक व्यक्ति को बेचकर और स्वयं को एक डोम के हाथों बेचकर किया।

(घ) हरिश्चंद्र काशी इसलिए चले गए थे क्योंकि काशी पृथ्वी के बाहर शिव के त्रिशूल पर टिका था ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है।

(ङ) राजा हरिश्चंद्र को अपना राज्य तब वापस मिला जब उन्होंने अपने पुत्र के शव को भी बिना कफन लिए फूंकने के लिए तैयार नहीं हुए। और जैसे ही उनके पत्नी ने अपने आँचल से आधा गज कपड़ा कफन के लिए फाड़ना शुरू किया वैसे ही आकाश

से पुष्पवृष्टि होती है तो धर्मराज सहित देवता प्रकट होते हैं और उनका राज्य वापस कर चुके हैं।

(2) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) पृथ्वी, (ख) दक्षिणा (ग) आसन (घ) आज्ञा

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) हरिश्चन्द्र ने स्वप्न में विश्वामित्र को सारी पृथ्वी दान कर दी थी।

(ख) हरिश्चन्द्र के दरबार में मुनि विश्वामित्र आए।

(ग) हरिश्चन्द्र को विश्वामित्र ने क्षत्रियाधम इसलिए कहा क्योंकि विश्वामित्र के राजदरबार में आने पर हरिश्चन्द्र उन्हें पहचान नहीं पाए और कहा कि आप तो पूर्व परिचित ज्ञात होते हैं।

(घ) विश्वामित्र ने दान पाने के बाद दक्षिणा की माँग की।

(ङ) रोहिताश्व की मृत्यु गुरुजी के लिए फूल लाने समय काले साँप द्वारा काट लेने से हुई थी।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) हरिश्चन्द्र ने (ख) (ii) डोम ने

(ग) (ii) साँप ने (घ) (i) अ

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) वाक्यों में प्रयोग करिए—

(*) मंदभाग्य—मंदभाग्य के कारण रोहिताश्व को साँप ने काट लिया।

(*) अधर्म—पाप करने से अधर्म बढ़ता है।

(*) मिथ्या—हरिश्चन्द्र कभी मिथ्या वचन नहीं बोलते थे।

(*) पाखंड—पाखंडियों के पाखंड से सदैव दूर रहना चाहिए।

(*) सत्यवादी—राजा हरिश्चन्द्र से बड़ा सत्यवादी आज तक कोई नहीं हुआ।

(*) दक्षिणा—महादान के बाद विश्वामित्र ने अपनी दक्षिणा माँगी।

(*) आँचल—शैत्या अपना आँचल फाड़कर रोहितश्व को लपेटकर श्मशान घाट गई थी।

(7) लिंग—निर्णय कीजिए—

काशी—पुल्लिंग, जल—स्त्रीलिंग, पृथ्वी—स्त्रीलिंग,

डोम—पुल्लिंग, स्वप्न—पुल्लिंग, त्रिशूल—पुल्लिंग,

शरीर—उभयलिंग, आँचल—स्त्रीलिंग, रोहिताश्व—पुल्लिंग

(8) 'दूर' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए—

बल = दुर्बल, व्यवहार—दुर्व्यवहार,

भावना = दुर्भावना, दशा = दुर्दशा, योग = दुर्योग,

भाग्य = दुर्भाग्य।

(9) निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए—

सत्य बोलने वाला = सत्यवादी

वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाए जाते हैं = श्मशान

वह धन जो किसी वस्तु के दान के समय दिया जाता है = दक्षिणा

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

(20) बादशाह का तोता

अभ्यास

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) अकबर ने तोते की देखभाल करने के लिए सेवक से कहा कि इस तोते की अच्छी तरह से देखभाल करना और उसे नियमित रूप से भोजन देना। हमें कभी भी यह पता नहीं लगना चाहिए कि तोता बीमार है अथवा मर गया है। वरना तुम्हारा सिर कटवा दिया जाएगा।

(ख) सेवक ने बादशाह को तोते की मृत्यु की खबर इसलिए नहीं बताया क्योंकि बादशाह ने सेवक से कहा था कि अगर तोते की बीमारी या मृत्यु की सूचना दोगे तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जाएगा।

(ग) सेवक बीरबल के पास इसलिए गया क्योंकि बादशाह के प्रकोप से सिर्फ बीरबल ही उसके जीवन को बचा सकते हैं।

(घ) बीरबल ने बादशाह को तोते के बारे में यह बताया कि हुजूर आपका तोता तो एक महान संन्यासी बन गया है।

(2) सही स्थान चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) दरबार (ख) देखभाल (ग) भोजन (घ) संन्यासी

(3) सोच-समझकर बताइए—

(क) बादशाह अकबर को तोता एक फकीर ने भेंट किया था।

(ख) सेवक बीरबल से मदद माँगने गया।

(ग) नहीं, तोता मर गया था।

(4) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (iii) एक फकीर ने (ख) (i) वह मर गया

(ग) (iii) बीरबल के (घ) (i) संन्यासी

(5) उच्चारण कीजिए—स्वयं कीजिए—

(6) पाठ में से ढूँढ़कर पाँच सर्वनाम शब्द और पाँच संज्ञा शब्द लिखिए—

सर्वनाम शब्द—मैं, हमें, तुम्हारा, वे, तुम

संज्ञा शब्द—बादशाह, फकीर, सेवक, तोता, दरबार

(7) निम्नलिखित शब्दों को विलोम शब्द लिखिए—

सुंदर—बदसूरत, संन्यासी—राजा, नियमित—अनियमित

चतुर—बेवकूफ, संकेत—संकेतविहीन, कष्ट—सुख

(8) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

प्रार्थना—निवेदन, चिंता—फिक्र, भोजन—खाना, बादशाह—राजा, बुद्धिमान—अक्लमंद, तोता—पक्षी

क्रियात्मक गतिविधियाँ—स्वयं कीजिए।

पुनरावृत्ति प्रश्न-पत्र-3

(पाठ 15 से 20 पर आधारित)

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) अवगुणों को दूर करने और सद्गुणों को लाने का उपाय निरंतर नहीं किया जाएगा तो अवगुण बने ही रहेंगे और सद्गुण नहीं आएँगे। अवगुण को दूर करने और सद्गुणों को अपनाने के प्रयत्न में, अवगुणों को दूर करने के प्रयासों की अपेक्षा सद्गुणों को अपनाने का ही महत्त्व अधिक है।

(ख) सत्कर्तव्य से कवि का यह तात्पर्य है कि हमें सदैव स्वार्थरहित होकर अपना जीवन दूसरों की सेवा में, दूसरों के हित में तथा देश के प्रति अपने सत्यकर्तव्य निभाने में अर्पित करना चाहिए।

(ग) दोनों पुत्रों ने छोटा पुत्र सफल हुआ क्योंकि उसने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए मोमबत्तियों की रोशनी से पूरे घर को प्रकाशवान बना दिया।

(घ) आज से हजारों वर्ष पहले मनुष्य ने निश्चय किया कि वह दरिद्रता की अवस्था में नहीं रहेगा, वह सामाजिक रूप में समृद्ध रहेगा, एक व्यक्ति नहीं, एक परिवार नहीं, एक जाति भी नहीं बल्कि समूचा मानव-समाज समृद्धि चाहता है। अदारिद्र्य चाहता है, अमंगल का अंत चाहता है, उमंग और उल्लास चाहता है। दीपावली का उत्सव उसी सामाजिक मंगलेच्छा का दृश्यमान मूर्त रूप है। समूचा समाज आज दरिद्रता के अभिशाप से मुक्ति चाहता है, अभाव के शिकंजे से छूटना चाहता है।

(ङ) राजा हरिश्चंद्र काशी इसलिए चले गए थे क्योंकि काशी पृथ्वी के बाहर शिव के त्रिशूल पर टिका था, ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है।

(2) वही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (ii) सुधर जाएगा, (ख) (i) माता-पिता (ग) (i) भाववाचक संज्ञा (घ) (iii) काली (ङ) (ii) डोम

(3) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

- (क) निर्माण (ख) स्वार्थरहित (ग) दो
(घ) काली (ङ) संकल्प

(4) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए—

(5) सही के सामने (✓) एवं गलत के सामने (×) का चिह्न लगाइए—

- (क) (×) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓)

आदर्श प्रश्न-पत्र

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) 'शीतल बहने' का तात्पर्य यह है कि हम मनुष्य की परेशानी को उसी तरह दूर करें जैसे मंद पवन बहकर हमें आराम पहुँचाता है।

(ख) पर्यावरण का संरक्षण स्वस्थ और सुखी मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि पर्यावरण हमारे जीवन के निर्वाह हेतु आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के प्रमुख साधन रहे हैं। पर्यावरण के विविध घटकों में वनों का अत्यधिक महत्त्व है। इसका आज का उपयोग गृह-निर्माण, मेज-कुर्सी, दरवाजे, खिड़कियाँ, बैलगाड़ी, कृषि उपकरण, खिलौने, खेल के सामग्री, वाद्य-यंत्र, नौकाएँ, खम्भे, पुल, कागज, माचिस आदि बनाने में किया जाता है।

(ग) दिवाकर जब नोट लेकर भुनाने गया था, तो भुनाकर लौटते समय एक मोटर के नीचे आ गया। उसके दोनों पैर कुचल गए थे।

(घ) परीक्षित की मृत्यु तब हुई जब तक्षक राजा परीक्षित के लिए तोड़े जाने वाले पुष्पों में कीड़े के रूप में प्रवेश कर उनके नए सुदृढ़ प्रासाद में घुस गया। अवसर पाकर तक्षक ने राजा परीक्षित को डस लिया जिससे उनकी मृत्यु हो गयी।

(2) सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—

- (क) (iii) गगन के समान (ख) (iii) सोना
(ग) (i) हड्डी (घ) (i) जवानी

(3) सही शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

- (क) ऊँचा, (ख) दियासलाई, (ग) पांडवों, (घ) चेहरा

(4) इन स्तम्भों को मिलाइए—

किशन—मेहनती, निबंध—मनाही, प्रताप—ईमानदार, तक्षक—सर्प

(5) सही के सामने (✓) एवं गलत के सामने (×) का चिह्न लगाइए—

- (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (×) (घ) (✓)

(6) निम्न शब्दों को शुद्ध करके लिखिए—

शाश्वत—शाश्वत, अधीकता—अधिकता, मूर्खाया—मूर्खता, अभयरणय—अभ्यारण्य, परिचीत—परिचित, बहूमूल्य—बहुमूल्य

(7) वचन बदलिए—

विद्यार्थी—विद्यार्थियों, देवी—देवियाँ, नेवला—नेवले, परिस्थिति—परिस्थितियाँ, जटिलताओं—जटिलता, व्यक्ति—व्यक्तियों

(8) लिंग बदलिए—

छात्र—छात्रा, महाराज—महारानी, बेटी—बेटा, सेवक—सेविका, आदमी—महिला, वृद्ध—वृद्धा

0000